IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वामी विवेकानंद की मानव निर्माणकारी शिक्षा: वर्तमान परिप्रेक्ष्य

Man-making Education of Swami Vivekanand: Current Perspective

पावक अग्रवाल[1]

शोध अध्येता, शिक्षा विभाग, छत्रपति शाहू जी महाराज वि0वि0, कानपुर (उ0प्र0)

E-Mail: pawak_phd21_edu@csjmu.ac.in

लक्ष्मी मिश्रा[2]

शोध अध्येत्री, शिक्षा विभाग, दयानन्द एंग्लो वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय सम्बद्ध छत्रपति शाहू जी महाराज वि0वि0, कानपुर नगर (उ0प्र0)

E-Mail: lakshmi_phd21_edu@csjmu.ac.in

सारांश

स्वामी विवेकानंद जी वैश्विक पटल पर सदैव युगदृष्टा तथा युगसृष्टा के रूप में जाने जाते हैं। ऐसे भारतीय चिंतक जिन्होंने मानव जाति को सदैव तमस के गर्त से निकालकर प्रकाश के मार्ग पर अग्रसर होने हेतु प्रेरित किया। स्वामी जी मानव निर्माण के लिए एक दिव्य पुंज की तरह सदा प्रकाशमान रहेंगे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी जी के विचार मानव जीवन में प्रेरणा स्रोत की तरह ओजवान हैं जो कि मानव को अनैतिकता के भंवर से निकालकर उसके जीवन में आध्यात्मिक तथा नैतिक प्रकाश को बिखेरता है। स्वामी विवेकानंद इस युग के प्रथम विचारक हैं जिन्होंने हम सभी को अपने देश की आध्यात्मिक, नैतिक, चारित्रिक श्रेष्ठता से अवगत कराया और साथ ही साथ पाश्चात्य देशों की भी अपने भारत देश की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया। स्वामी जी को भविष्य तथा वर्तमान के मध्य की एक फलदायी संयोजक कड़ी के रूप में माना जा सकता है। स्वामी जी एक ऐसे विचारक थे जिन्होंने सदैव मानव निर्माणकारी शिक्षा की वकालत की है। उनका कहना था कि शिक्षा ऐसी हो जो मनुष्य को उसके जीवन संघर्षों के लिए तैयार करे तथा उसमें अपार संभावनाओं हेतु साहस भर दे। जिससे वह जीवन की अनगिनत चुनौतियों का पूरे सकारात्मक भाव से डटकर सामना कर सके। उनके अनुसार मानव निर्माणकारी शिक्षा के साथ-साथ उसमें मानवीय गुणों, साहस, धैर्य, आत्मविश्वास, व्यावसायिक कुशलता, अंतर्निहित पूर्णता आदि का अद्भुत समावेश भी होना चाहिए। शिक्षा वह शक्तिशाली हथियार है, जिससे मनुष्य का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। स्वामी जी कहते हैं मनुष्य ऐसा हो जिसमें अदम्य साहस,

उत्कृष्ट इच्छाशक्ति तथा मनुष्य को ईश्वर का मंदिर बनाने की क्षमता विद्यमान हो। स्वामी विवेकानंद जी के विचारों में मनुष्यता का मूल समाहित है। इनका मानना था कि सभी मानवों में ईश्वर का अस्तित्व है, इसीलिए प्रत्येक मानव ईश्वर की एक अद्भुत रचना है। गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने भी इनके विषय में कहा है कि यदि आप भारत को जानना चाहते हैं, तो विवेकानंद जी का अध्ययन कीजिए। उनमें सभी कुछ सकारात्मक है, नकारात्मक कुछ भी नहीं। आधुनिक युग की मांग को ध्यान में रखते हुए स्वामी जी ने कहा था कि "खाली पेट धर्म नहीं होता है।" मानव को शिक्षा प्रदान करने हेतु शिक्षा का स्वरूप कैसा हो ? प्राचीन शिक्षा वर्तमान समय में कैसे उपयोगी हो सकती है? प्रस्तुत शोध पत्र मानव मूल्यों, मानव निर्माण पर आधारित शिक्षा का स्वरूप तथा स्वामी विवेकानंद जी के ओजस्वी विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता पर प्रकाश डालता है।

बीज शब्द- स्वामी विवेकानंद, शिक्षा दर्शन, मानव निर्माणकारी शिक्षा

प्रस्तावना

भारत एक ऐसा देश है जो सदैव साधु-संतों एवं महापुरुषों की जन्म व कर्म स्थली के रूप में जाना जाता रहा है। इस पावन भूमि पर अनेक महापुरुषों का पदार्पण हुआ है, जिनमें स्वामी विवेकानंद जी एक दिव्यपुंज की तरह प्रकाशमान हैं। उनके शैक्षिक विचार शिक्षा के क्षेत्र में अविस्मरणीय हैं। शिक्षा किसी भी राष्ट्र की प्रथम आवश्यकता होती है जो मानव के आंतरिक व बाह्य दोनों प्रकार की शक्तियों का विकास करती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी राष्ट्र के विकास के लिए सामान्य शिक्षा के साथ व्यावसायिक शिक्षा, संस्कृति तथा मानवीय मूल्यों पर जोर देती है। परिवर्तनशील परिवेश में राष्ट्र की आवश्यकतानुसार शिक्षा के क्षेत्र में अभूतपूर्व परिवर्तन करने का प्रयास किए जाते रहे हैं। नवयुगकारी परिवर्तन का प्रणेता कोई न कोई दिव्य महापुरुष ही होता है। स्वामी विवेकानंद जी ने परिवर्तन हेतु शैक्षिक क्षेत्र को प्राथमिकता दी, जिसमें वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जिससे मनुष्यों में मानवता का निर्माण हो, उसका संपूर्ण विकास हो, जिससे मानव शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक रूप से विकसित रहे। वर्तमान परिदृश्य के अनुसार शिक्षा ऐसी हो जो राष्ट्र को प्रगतिशील व मानव को आत्मनिर्भर बनाए, उनमें सिंह जैसा साहस भर सके, बिना किसी भेदभाव के सभी के प्रति असीम प्रेम का संचार कर सके। सहनशक्ति, बलिदान तथा गरीबों व असहायों के प्रति सहानुभूति जागृत कर सके। स्वामी विवेकानंद जी विश्वबंधुत्व की भावना रखते थे, उनका सदैव मत रहा कि 'सर्वे भवंतु सुखिनः' अर्थात् सभी सुखपूर्वक रहें। उन्होंने मानव निर्माण हेतु अध्यात्मिकता तथा भौतिकता दोनों का अच्छा समन्वय प्रस्तुत किया। भारत की पावन धरा पर ही भारतीयों को सजग, कर्तव्यनिष्ठ, सद्चरित्र तथा चैतन्य बनाने में स्वामी

विवेकानंद जी ने सराहनीय योगदान दिया एवं मानव निर्माणकारी शिक्षा की संकल्पना दी। उनकी मानव निर्माणकारी शिक्षा वर्तमान समय में अमृत की बूँद के समान है, एक ऐसी अमृत की बूँद जो सम्पूर्ण समाज हेतु हितकारी है। वे एक ऐसे महापुरुष थे जिनके विचार नागरिकों के हृदय में प्रकाश पुंज की तरह विद्यमान हैं। वे धर्म, अध्यात्म और मानवीय गुणों से परिपूर्ण मानव का निर्माण करना चाहते थे, इसलिए स्वामी जी ने मानवता को मूल बिंदु के रूप में अलंकृत किया।

स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। इनके पिता का नाम विश्वनाथ दत्त तथा माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। इनके पिताजी कोलकाता में एक वकील थे एवं माता धर्मपरायण गृहणी थीं। बचपन में इनका नाम नरेंद्रनाथ दत्त था। वे बचपन से ही बड़े कुशाग्र बुद्धि के बालक थे। हरबर्ट स्पेंसर तथा जॉन स्टुअर्ट मिल इनके प्रिय दार्शनिक थे। 7 वर्ष की आयु में उन्होंने कृतिवास की बांग्ला रामायण कंठस्थ कर ली थी। इनकी मृत्यु 4 जुलाई 1902 में क्षय रोग से पीड़ित होने के कारण हो गई थी। स्वामी विवेकानंद जी अत्यंत आध्यात्मिक प्रतिभा के धनी थे।

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में अनेक प्रकार की विसंगतियाँ व्याप्त हो गई हैं। मानवीय मूल्यों व मानव निर्माणकारी शिक्षा में भी कहीं न कहीं गिरावट देखने को मिलती है। लेकिन स्वामी विवेकानंद जी के विचार ऐसे हैं जो आज की आवश्यकताओं को पूरा करने में अत्यंत कारगर हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने व्यावसायिक शिक्षा, मानव निर्माणकारी शिक्षा, आध्यात्मिक शिक्षा पर कई वक्तव्य दिए हैं। इन्होंने व्यावसायिक शिक्षा की निपुणता हेतु पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान तथा तकनीकि शिक्षा के साथ-साथ वैज्ञानिक आविष्कारों के प्रयोग की भी बात की है। रामधारी सिंह दिनकर के विचार से "विवेकानंद वह समुद्र है जिसमें धर्म और राजनीति, राष्ट्रीयता और अंतरराष्ट्रीयता तथा उपनिषद और विज्ञान सब के सब समाहित होते हैं।"

साहित्यावलोकन

- **त्रिवेदी, राजेश्वरी (2009)** ने **'सोशल चेंज इन इंडियन सोसायटी विद रेफरेंस टू द कंट्रीब्यूशन ऑफ स्वामी विवेकानंद'** पर अध्ययन किया और पाया कि भारतीय पुरुषों एवं महिलाओं को व्यावहारिक दक्षता और संगठित सहकारी प्रयासों के लिए नागरिकता, सामाजिक जागरूकता के मूल्यों में शिक्षित किया जाना चाहिए। मानव निर्माण शिक्षा और मानव निर्माण धर्म के प्रसार के माध्यम से उन्होंने स्वतंत्र और आत्म-अनुशासित नागरिकों के निर्माण की मांग की है। (त्रिवेदी,2009)
- **मोहता, सत्य प्रकाश** (2012) ने **'स्वामी विवेकानंद के नव्य वेदांत दर्शन एवं उनके शैक्षिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता'** पर अध्ययन किया और पाया कि आत्मबोध को वर्तमान शिक्षा का अंग बनाया

जाना चाहिए तभी हम मानव को पुनः मानव बनाने में सफल हो पाएंगे। जिससे विश्व में व्याप्त अनेकानेक समस्याओं का समाधान स्वतः ही हो जाएगा और व्यक्ति के अंदर होने वाला यह परिवर्तन अंततः समाज को उत्तरोत्तर श्रेष्ठता की ओर अग्रसित करेगा। (मोहता, 2012)

- **राजपूत, प्रमोद कुमार एवं उनियाल, मदन मोहन** (2016) ने **'स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचारों की वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता'** नाम के अपने लेख में लिखा है कि भारतीय राष्ट्रवादिता के लिए वेद तथा गीता जीवन का आधार है। जनमानस को इसके अनुसरण करने की प्रेरणा दी जानी चाहिए। स्वामी जी ने नैतिकता को भी अपने दार्शनिक चिंतन में कर्तव्य एवं अधिकारों के रूप में दर्शाया है। (राजपूत एवं उनियाल, 2016)
- **राज, अनुज एवं सजावन, दीप्ति** (2017) ने **'स्वामी विवेकानंद का मानव निर्माणकारी शैक्षिक दृष्टिकोण'** नामक अपने लेख में कहा है कि स्वामी जी के विचार वर्तमान पीढ़ी हेतु और भी उपयोगी प्रतीत होते हैं क्योंकि पाश्चात्य विचारों का प्रभाव एवं सभी नागरिकों के सम्मुख जीविकोपार्जन का दबाव भी बढ़ रहा है। इन विषम परिस्थितियों में स्वामी विवेकानंद का समन्वयवादी दर्शन नई पीढ़ी में आशा एवं उत्साह का संचार करने में सक्षम है। (राज एवं सजावन, 2017)
- **बर्मन, प्रभा** (2012) ने **'विवेकानंद थॉट्स ऑन मैन मेकिंग थ्रू मॉरल वैल्यूज एंड करेक्टर डेवलपमेंट एंड इट्स प्रेजेंट रेलीवेंसी इन स्कूल एजुकेशन'** नामक लेख में लिखा है कि नैतिक मूल्यों और चरित्र निर्माण के बारे में स्वामी विवेकानंद के विचार हमारे वर्तमान स्कूली शिक्षा में विशेष महत्व रखते हैं क्योंकि वास्तविक स्कूली शिक्षा हमारे छात्रों को सही तरीके से कुछ करने या सोचने के लिए प्रेरित करती है। (बर्मन, 2012)

अध्ययन के उद्देश्य :-

अध्ययन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं -

1. स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन में मानव निर्माणकारी शिक्षा के संप्रत्यय का अध्ययन करना।
2. स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता का अध्ययन करना।
3. स्वामी विवेकानंद जी की मानव निर्माणकारी शिक्षा का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विवेचना करना।

स्वामी विवेकानंद

स्वामी विवेकानंद (1863-1902) एक भारतीय संन्यासी, धर्म निरपेक्षता के प्रचारक और महान योगी थे। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को कोलकाता में हुआ। उनका वास्तविक नाम नरेंद्रनाथ था, जिन्होंने भारतीय धर्म, योग, वेदांत और पौराणिक साहित्य का गहन अध्ययन किया और इसे पश्चिमी दुनिया में प्रसारित किया। (गुप्ता, 2011)

स्वामी विवेकानंद को ही रामकृष्ण मिशन की स्थापना करने का श्रेय जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य था धार्मिक, सामाजिक और शैक्षिक क्षेत्रों में सेवा करना। उन्होंने विश्व धर्म सम्मेलन में भारतीय धर्म और संस्कृति को प्रदर्शित कर दुनियाभर में भारतीयता का प्रचार किया। विश्व धर्म सम्मेलन का आयोजन 11 सितंबर 1893 को शिकागो, इलिनोइस, संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ था। यह सम्मेलन स्वामी विवेकानंद द्वारा दी गई एक भाषण के माध्यम से चर्चा करने का एक महत्वपूर्ण अवसर था जहां उन्होंने भारतीय धर्म और वेदांत के महत्व को प्रस्तुत किया।

स्वामी विवेकानंद की शिक्षा के प्रति उनके विचार बहुत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने युवा और बुजुर्गों को ज्ञान, स्वतंत्रता, सामर्थ्य और आत्मविश्वास की महत्ता सिखायी। उनके अनुसार, शिक्षा का उद्देश्य है एक आदर्श समाज और व्यक्ति का निर्माण करना। उन्होंने व्यक्तिगत और सामाजिक उन्नति के लिए शिक्षा को एक प्रमुख माध्यम बताया। (गुप्ता, 2011)

स्वामी विवेकानंद ने जीवन में संस्कार और मूल्यों की महत्वता को बहुत महत्त्व दिया। उन्होंने यह सिद्धांत प्रदान किया कि एक व्यक्ति की विकास में शिक्षा के साथ-साथ नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास भी आवश्यक है। स्वामी जी के विचारों का व्यापक प्रभाव आज भी दिखाई देता है। उनके विचार ने लोगों की मानसिकता और जीवनशैली को प्रभावित किया है। उन्होंने विदेशों में भी अपने विचारों को प्रस्तुत कर भारतीय धर्म और संस्कृति को प्रमुखता दी। (गुप्ता, 2011)

स्वामी विवेकानंद जी का शिक्षा दर्शन

स्वामी विवेकानंद जी अद्वैत वेदांत तथा नव्य वेदांत के समर्थक थे। वेदांत किसी की निंदा नहीं करता, अपितु वह मनुष्य को वर्तमान समय में वह जिस रूप में विद्यमान है उसे उस रूप मे न देखकर वरन् उसके वास्तविक स्वरूप में देखता है, क्योंकि मानव कभी न कभी अपने समस्त ज्ञान का साक्षात्कार कर उसकी शक्ति और आनंद के उद्गम स्थल का साक्षात् अनुभव करता है। स्वामी विवेकानंद ने भक्ति मार्ग की भी बात की है, जिसमें उन्होंने बताया कि भक्ति के द्वारा ही मानव, विकास की उच्च अवस्था को प्राप्त कर इंद्रियातीत अखंड ब्रह्म

को भी प्राप्त कर सकता है। स्वामी विवेकानंद जी ने वर्तमान विद्यालयी शिक्षा की अपेक्षा व्यावहारिक शिक्षा का प्रबल समर्थन किया। संस्कारों की शिक्षा धर्म ग्रंथों व उपदेशों के माध्यम से ही संभव है, जो वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अत्यंत आवश्यक हैं। विवेकानंद जी का कहना है कि ‘‘सभी वस्तुएँ एक ही शक्ति की घोतक हैं।“ उनका मानना था कि किसी परीक्षा को उत्तीर्ण करने या उपाधि प्राप्त करने से व्यक्ति शिक्षित नहीं हो जाता वरन् वास्तविक शिक्षा तो मनुष्य को अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए जीवन संघर्ष हेतु तैयार करती हैं। स्वामी विवेकानंद जी ने अपने शिक्षा दर्शन में एकाग्रता, ब्रह्मचर्य, आत्मनिष्ठा, मन, वचन और कर्म की शुद्धि पर विशेष बल दिया है।

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता है। मनुष्य जब भी अधोगति या अवनति के अंधकार में होता है, शिक्षा ही उसे वहाँ से बाहर निकालती है। स्वामी जी कहते हैं कि शिक्षा ऐसी हो जो मनुष्य को सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करे तथा मनुष्य के अस्तित्व के पीछे कुछ पदचिह्न छोड़ जाए

“तुलसी आए जगत में, जगत हँसे तुम रोय, ऐसी करनी कर चलो, आप हँसे, जग रोय“

शिक्षा मनुष्य के अंदर वीरता के भाव को उद्भाषित करती है तथा मनुष्य को अपने मार्ग से विचलित हुए बिना उस पर अडिग रहने की प्रेरणा प्रदान करती है। इस संबंध में एक सुभाषित श्लोक प्रसिद्ध है -

निंदंतु नीतिनिपुणः यदि वा स्तुवंतु,

लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम।

अधैव वा मरणमस्तु युगांतरे वा।

न्यायात्पथः प्रविचलंति पदं न धीराः।।

अर्थात् नीति कुशल लोग तुम्हारी निंदा करें या स्तुति, लक्ष्मी तुम पर कृपालु हो या चली जाए, तुम्हारी मृत्यु आज हो या कालांतर में परंतु न्यायपथ से कभी विचलित मत होना।

शिक्षा मनुष्य को उसके पूर्णत्व का बोध कराती है, जिससे वह अंतिम लक्ष्य, परम सत्य अथवा परम ब्रह्म की प्राप्ति करता है। शिक्षा ही मनुष्य को अपने ज्ञानेंद्रियों और कर्मेंद्रियों का समुचित उपयोग कर स्वतंत्र चिंतन के अवसर प्रदान करती है। वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा वही है जो मनुष्य को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाए।

शिक्षण विधि

स्वामी जी आत्मा की पूर्णता में विश्वास करते थे एवं यह मानते थे कि आत्मा सर्वत्र है। आत्मपूर्णता तभी संभव है जब मनुष्य को स्वयं आत्मज्ञान हो। इसके लिए स्वामी जी ने भौतिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान की बात की है। जिसके लिए उन्होंने कुछ शिक्षण विधियाँ जैसे - अनुकरण विधि, योग विधि, व्याख्यान विधि, स्वाध्याय विधि, प्रदर्शन और प्रयोग विधि, निर्देशन और परामर्श विधि, तर्क और विचार विधि, आदि अनुकरण योग्य बतायी हैं। वर्तमान परिदृश्य में ये शिक्षण विधियाँ शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई हैं।

शिक्षक

स्वामी जी प्राचीन गुरुकुल प्रणाली के समर्थक थे। यह मानते थे कि शिक्षक को संयमी और आत्मज्ञानी होना चाहिए। स्वामी जी शिक्षकों से यह भी आशा करते थे कि वह मनोविज्ञान की सहायता से बच्चों के कर्म जनित भिन्नता को समझ कर उनके लिए अनुकूल वातावरण तथा शिक्षा की व्यवस्था करे।

शिक्षार्थी

स्वामी जी का मानना था कि शिक्षार्थी को ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए तथा उसे इंद्रियनिग्रह का भी पालन करना चाहिए, जिससे वह परम सत्य की अनुभूति को प्राप्त कर सके। शिक्षार्थी को चाहिए कि वह अपने गुरु को ईश्वरीय रूप में देखे व आदर करे।

विद्यालय

स्वामी जी का मानना था कि विद्यालय, प्राकृतिक स्थान में होने चाहिए। जहाँ पर पर्यावरण शुद्ध हो और व्यायाम व क्रीड़ा की व्यवस्था हो। अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ ध्यान, योग की क्रियाएं भी सम्मिलित होना श्रेयस्कर है।

अनुशासन

स्वामी जी का मानना था कि वास्तविक अनुशासन वह है जब छात्र आत्म प्रेरित होकर स्वयं अनुशासित हो जाए और उसी के अनुरूप कार्य करे। स्वामी जी आध्यात्मिक अनुशासन के पक्षधर थे।

मानव निर्माणकारी शिक्षा

मानव निर्माणकारी शिक्षा वह है, जो मनुष्य को सच्ची मानवता के सन्निकट लाती है। स्वामी विवेकानंद जी के शब्दों में सभी शिक्षाओं का अंतिम लक्ष्य मानव निर्माण होना चाहिए। वे पुस्तकीय व विद्यालयी ज्ञान को पूर्ण नहीं मानते थे, वरन् ऐसी शिक्षा की संकल्पना करते थे जिससे चरित्र का निर्माण हो, मनोबल बढ़े एवं बुद्धि का विकास हो सके। ऐसी शिक्षा जिसके द्वारा मानव अपनी इच्छाशक्ति को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त कर सके। उनके अनुसार सच्चा मानव वही है जिसे सुचिता, पवित्रता, ज्ञान, विवेक, प्रेम, स्वाभिमान, आत्मज्ञान के द्वारा स्वयं की अनुभूति हो तथा संपूर्ण जगत को ब्रह्ममय मानकर अपनी ज्ञान पिपासा को तृप्त करने का प्रयत्न करता रहे। स्वामी जी ने शरीर के महत्व को समझाते हुए कहा है कि प्रत्येक जीव का शरीर एक मंदिर है, उनमें मनुष्य का शरीर सर्वश्रेष्ठ मंदिर है, यदि मैं उसमें पूजा नहीं कर सकता, तो अन्य मंदिरों में बैठकर पूजा करने से कोई लाभ नहीं है।

मानव निर्माणकारी शिक्षा के उद्देश्य

मानव निर्माणकारी शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

- **चरित्र निर्माण-** शिक्षा द्वारा ऐसे चरित्र तथा व्यक्तित्व का निर्माण होता है जो दूसरों के हृदय में आकर्षण का केंद्र बने। स्वामी जी चरित्र निर्माण को सर्वश्रेष्ठ स्थान देते हैं। वे कहते हैं कि व्यक्ति के जैसे विचार होते हैं उसी के अनुरूप उसके चरित्र का भी विकास होता है। इसीलिए शिक्षा ऐसी हो जो सच्चे व आध्यात्मिक चरित्र को प्रेरित करे। चरित्र ऐसा हो जो व्यक्ति को निर्भयता और करुणा की ओर ले जाए।
- **सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास-** स्वामी जी कहते हैं कि मनुष्य अज्ञानतावश त्रुटि करता है। सामाजिकता का विकास शिक्षा के द्वारा ही संभव है और सामाजिक व सांस्कृतिक गुणों से परिपूर्ण मानव, स्वयं के आत्मदर्शन की क्षमता रखता है।
- **शारीरिक विकास-** शारीरीक विकास के संदर्भ में स्वामी जी कहते हैं कि संसार में यदि कोई पाप है, तो वह है दुर्बलता। उसका त्याग करो, यही उपनिषदीय शिक्षा भी है। वर्तमान समय में बलिष्ठ व ऊर्जावान मनुष्य का निर्माण करना ही शिक्षा का परम् उद्देश्य है।
- **जीविकोपार्जन तथा व्यवसायिक शिक्षा-** जीविकोपार्जन के संदर्भ में स्वामी जी का मानना है कि वर्तमान समय को ध्यान में रखते हुए नागरिकों को तकनीकि व व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए। जिससे वे जीविकोपार्जन के साथ-साथ राष्ट्र की प्रगति में भी योगदान कर सकें। बालकों की

आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उनमें कृषि, उद्योग, तकनीकि आदि का सामर्थ्य उत्पन्न करना चाहिए, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें।

- **धार्मिक शिक्षा-** स्वामी जी ने देश-विदेश में भ्रमण किया। सभी धर्मों के प्रति उनके मन में गहरी आस्था थी। वे सभी धर्मों के अध्ययन में रुचि भी लेते थे। शिकागो विश्व धर्म सम्मेलन में उन्होंने कहा भी था कि "मुझे गर्व है कि मैं हिंदू धर्मावलंबी हूँ, जो सहिष्णुता और विश्व बंधुत्व की शिक्षा देता है।'' तथा "लोगों का यह सोचना व्यर्थ है कि संसार में कभी केवल एक ही धर्म होगा।" धार्मिक शिक्षा द्वारा व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्मश्रद्धा, आत्मनियंत्रण, आत्मनिर्भरता, आत्मत्याग, मानवता, सहयोग, प्रेम एवं विश्व बंधुत्व की भावना का सृजन होता है।

निष्कर्ष

स्वामी विवेकानंद जी ने आध्यात्मिक तथा भौतिक दोनों प्रकार के मूल्यों का अद्भुत समावेश दर्शाया है। इनके शैक्षिक विचार आज भी पूर्णता नए ही प्रतीत होते हैं। जो शिक्षा के क्षेत्र में सेतु की तरह कार्य कर रहे हैं। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मानवीय मूल्यों में जो गिरावट आई है उसमें स्वामी जी के शैक्षिक विचार मेरुदण्ड के समान हैं। मानव निर्माणकारी शिक्षा भी वर्तमान परिदृश्य में अत्यंत आवश्यक है। अतः हम कह सकते हैं कि स्वामी जी ने मानवीयता से परिपूर्ण जिस शिक्षा की वकालत की है वह आज के समय की अटूट आवश्यकता के रूप में सिद्ध हो सकती है।

संदर्भ सूची

राजपूत, प्रमोद कुमार एवं उनियाल, डॉ0 मदन मोहन. (2016). स्वामी विवेकानन्द के शैक्षिक दार्शनिक विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता. 7(1), 172–177.

विवेकानंद, स्वामी. (2018). शिकागो वक्तृता (2018th ed., Vol. 30). स्वामी ब्रह्मस्थानन्द (अध्यक्ष), रामकृष्ण मठ, राम कृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर. https://rkmathnagpur.org/

विवेकानंद, स्वामी . (2022). व्यक्तित्व का विकास (2022th ed., Vol. 19). स्वामी ब्रह्मस्थानन्द (अध्यक्ष), रामकृष्ण मठ, राम कृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर. https://rkmathnagpur.org/

सारदानन्द, स्वामी. (2015). वेदान्त - सिद्धान्त एवं व्यवहार (2015th ed., Vol. 10). स्वामी ब्रह्मस्थानन्द (अध्यक्ष), रामकृष्ण मठ, राम कृष्ण आश्रम मार्ग, धन्तोली, नागपुर. https://rkmathnagpur.org/

Barman, P., & Bhattacharyya, Dr. D. (2012). Vivekananda's thoughts on man-making through moral values and character development and its present relevancy in school education. 1(2), 30–37.

Gupta, R. (2011). Swami Vivekananda: A comprehensive study. Prabhat Prakashan.

Mahadevan, B. (2018, October 6). *Education for Man Making & Character Building: Inspirations from Swami Vivekananda*. https://www.linkedin.com/pulse/education-man-making-character-building-inspirations-from-mahadevan-b

Mishra, R. K. (2015). Swami Vivekananda's Vision of Man-Making Education. *Ignited Minds Journals*, *10*(20), 0-0 (0). https://doi.org/10.29070/JASRAE

Mohta, S. P. (2012). *Swami Vivekanand ke Navya Vedant Darshan avm unke Shekshik Vicharom ki Vartamaan Prasangikta* [Shri Jagdishprasad Jhabarmal Tibarewala University]. https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/8852

Pushpendra, & Kaushal, A. (2021). स्वामी विवेकानन्द एवं महात्मा गाँधी जी के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन. *Ignited Minds Journals*, *18*(01), 120-125 (6). https://doi.org/10.29070/JASRAE

Raj, D. A., & Sajwan, D. (2017). Swami Vivekanand ka manav Nirmankari Shaikshik Drashthikon. *International Education and Research Journal (IERJ)*, *3*(5), Article 5.

Singh, K. (2020, November 4). मानव निर्माण शिक्षा में स्वामी विवेकानन्द का योगदान-मानव निर्माण शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य. *SarkariGuider.Com*. https://sarkariguider.com/maanav-nirmaan-shiksha-mein-svaamee-vivekaanand-ka-yogadaan/

Trivedi, R. (2009). *Social change in Indian society with reference to the contribution of Swami Vivekananda* [Maharaja Sayajirao University of Baroda]. https://shodhganga.inflibnet.ac.in:8443/jspui/handle/10603/72286